रानीखेत नगर की शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण

योगेश मैनाली*

सारांश

आदिकाल से धर्म और समाज आपस में घनिष्ठता से जुड़े हुए हैं। विश्व के सभी समाजों में धर्म का प्रबल अस्तित्व रहा है। प्रत्येक समाज ने अपनी संस्कृति और सभ्यता के अनुसार धर्म में विश्वास के तरीकों और क्रियाओं को भिन्न–भिन्न स्वरूप प्रदान किये हैं। समाज सतत् परिवर्तनशील प्रतिमान है। समय की धारा एवं दिशा के अनुरूप समाज में भी परिवर्तन होता आया है। ऐसे परिवर्तन के प्रवाह से धर्म भी प्रभावित हुआ है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण (Urbanisation), यातायात एवं संचार के साधनों में उत्तरोत्तर विकास, पाश्चात्य विचारधारा, आधुनिक शिक्षा एवं जीवन के बदलते प्रतिमानों ने शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों व क्रियाकलापों को प्रभावित किया है अथवा नहीं, इस प्रस्तुत शोध पत्र में यह विश्लेषित किया गया है कि शिक्षित भारतीय नारी नवीनता की ओर बढ़ती हुई अपनी प्राचीन परम्पराओं से कहाँ तक एवं किस मात्रा में जुड़ी हुई है? वर्तमान समय में परिवर्तनीय परिस्थितियों में भारतीय नारी धार्मिक क्रियाकलापों व धार्मिक विश्वासों को किस रूप में देख रही है। उसके जीवन में इन धार्मिक क्रियाकलापों का क्या स्थान है? इसी क्रम में यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि नगरीय पर्यावरण में सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि की विशिष्टताओं से प्रभावित महिलाएँ धार्मिक प्रथाओं, मान्यताओं तथा क्रियाकलापों के प्रति भी आस्थावान हैं या नहीं? धार्मिक क्रियाओं एवं गतिविधियों में महिलाएँ किस सीमा तक लिप्त हैं?

मुख्य शब्द– क्रियाकलापों, धार्मिक विश्वासों, महिलाओं, परिवारों तथा शिक्षित।

प्रस्तावना

: यह निर्विवाद सत्य है कि प्रत्येक समुदाय में अपने धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। यद्यपि आज बदलते परिवेश में धर्म के प्रति श्रद्धा या विश्वासों को मान्यता प्रदान नहीं की जाती है, परन्तु आज भी महिलाओं में धर्म के नाम पर अत्यधिक आस्था तथा अंधविश्वास देखने को मिलता है। अधिकांश महिलाएं अपने सम्पूर्ण जीवन तथा नित्य प्रतिदिन की दिनचर्या को भी धार्मिक विश्वासों के आधार पर निर्धारित करती हैं। दुर्खीम ने अपनी पुस्तक 'दि ऐलीमेन्ट्री फॉर्म्स ऑफ रिलिजियस लाइफ' में 'धर्म को पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित विश्वासों और आचरणों की वह समग्र व्यवस्था बताया है, जो इस पर विश्वास करने वालों को एक नैतिक समुदाय में संयुक्त करती है।' धर्म भारतीय समाज में नियंत्रण का महत्वपूर्ण साधन है। ईश्वर में विश्वास की भावना धर्म में केन्द्रीय स्थान रखती है तथा सर्वव्यापी शक्तियों के रूप में ईश्वर के इर्द–गिर्द ही समस्त धार्मिक विश्वासों तथा आचरण संहिताओं का ताना–बाना व्यवस्थित होता है। ईश्वर में आस्था रखने वाले व्यक्तियों का दृष्टिकोण ईश्वर में विश्वास न रखने वाले व्यक्तियों से भिन्न होता है। जॉनसन ने अपनी पुस्तक 'सोशियोलॉजी ऑफ रिलिजन' में बताया है कि 'धर्म प्राणियों, शक्तियों, स्थानों अथवा अन्य वस्तुओं की अलौकिक व्यवस्था से सम्बन्धित विश्वासों एवं व्यवहारों की कुछ अधिक या कम मात्रा में एक साम्यपूर्ण व्यवस्था है।' वास्तव में धर्म स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर के देवी–देवताओं, पवित्र स्थानों एवं पवित्र वस्तुओं, पौराणिक विश्वासों तथा आदरपूर्ण व भयपूर्ण शक्तियों के प्रति श्रद्धा व आस्था रखने तथा उन्हें प्रसन्न एवं संतुष्ट रखने के लिए की जाने वाली व्यक्तिगत और सामूहिक पूजापाठ और पवित्र कृत्यों तथा व्यवहारों की एक व्यवस्था माना जा सकता है। प्रत्येक समाज में धर्म तथा धार्मिक विश्वासों का इतना अधिक महत्व है कि कोई भी व्यक्ति इनकी अवहेलना करके समाज से अनुकूलन करने में कठिनाई का अनुभव करता है।

भले ही धर्म परम्परागत तथा रूढ़िवादी प्रकृति का माना जाता है। फिर भी यह निर्विवाद रूप से स्वीकार करना ही होगा कि शिक्षा के बढ़ते स्तर की वजह से आज मनुष्यों के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा मनोवैज्ञानिक स्तर में हुए प्रगतिवादी परिवर्तनों से धार्मिक विश्वास एवं क्रियाकलाप प्रभावित हुए हैं। इस शोध–पत्र में शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों तथा क्रियाकलापों के प्रति दृष्टिकोण आदि के संदर्भो में प्राथमिक जानकारियाँ हासिल करके उनके धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों का अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र एवं निदर्श : प्रस्तुत शोधपत्र रानीखेत नगर की शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों के समाजशास्त्रीय विश्लेषण पर आधारित है। उत्तराखंड राज्य दो मंडलों (गढ़वाल मंडल तथा कुमाऊँ मंडल) में विभक्त है।

* शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखण्ड

वर्तमान में इस राज्य में कुल 13 जिले हैं, जिनमें से 7 जिले (हरिद्वार, देहरादून, पौड़ी, टिहरी, उत्तरकाशी, रूद्रप्रयाग, चमोली) गढ़वाल मंडल में स्थित हैं। शेष 6 जिले (नैनीताल, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़, बागेश्वर, चम्पावत, उधमसिंह नगर) कुमाऊँ मंडल में स्थित हैं। शोधार्थी का अध्ययन क्षेत्र 'रानीखेत' कुमाऊँ मण्डल के जनपद अल्मोड़ा के अन्तर्गत आता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार रानीखेत की जनसंख्या 18,886 है, जिसमें पुरूषों की संख्या 11,412 तथा महिलाओं की संख्या 7,474 है। रानीखेत नगर की साक्षरता दर 95,21 प्रतिशत है, जो राज्य की औसत 78,82 प्रतिशत से अधिक है। पुरूषों में साक्षरता लगभग 97,79 प्रतिशत है, जबकि महिलाओं में साक्षरता दर 91,18 प्रतिशत है। निदर्श के लिए 79 चयनित महिलाओं में 11 महिलाएं इंटरमीडिएट, 25 महिलाएं स्नातक तथा 43 महिलाएं स्नातकोत्तर हैं। सभी महिलाएं शिक्षा के महत्व को भली–भाँति जानती हैं।

तालिका 1.1

रानीखेत नगर के वार्ड एवं परिवारों की संख्या का विवरण

वार्ड नम्बर	परिवारों की संख्या	जनसंख्या
एक	1313	6529
दो	987	3411
तीन	326	1555
चार	449	1948
पाँच	1001	2643
छः	338	1462
सात	346	1338

रानीखेत नगर उपरोक्त सात वार्डो में से निदर्शन का चयन करने के लिए 'बहुस्तरीय दैव निदर्शन' प्रणाली का चयन किया गया है। यह कार्य तीन चरणों में किया गया है। प्रथम चरण में नगर के अंतर्गत आने वाले सात वार्डो में से 30 प्रतिशत वार्डो का चयन किया गया है। द्वितीय चरण में दैव निदर्शन पद्धति से वार्ड नम्बर–4 तथा 6 का चयन किया गया। तृतीय चरण में चयनित वार्डो से 10 प्रतिशत परिवारों का चयन लॉटरी पद्धति से किया गया। इस प्रकार वार्ड संख्या–4 से 45 तथा वार्ड संख्या–6 से 34 परिवारों अर्थात् कुल 79 परिवारों का अध्ययन हेतु चयन किया गया, जिनका विवरण निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत है –

तालिका 1.2

चयनित परिवारों से कुल उत्तरदाताओं की संख्या

वार्ड नम्बर	कुल परिवार	चयनित परिवारों की संख्या
चार	449	45
छः	338	34
कुल		**79**

शोध अभिकल्प एवं पद्धति शास्त्र : किसी भी कार्य को एक निश्चित दिशा में करने के लिए शोध प्रारूप का निर्माण किया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में अन्वेषणात्मक–विवरणात्मक शोध अभिकल्प का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत शोधार्थी द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है कि विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी के इस युग में शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर क्या प्रभाव पड़े हैं? क्या शिक्षित महिलाएं आज भी इन धार्मिक विश्वासों में विश्वास करती हैं? आधुनिक शिक्षा, आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप

क्या शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों में बदलाव आये हैं अथवा नहीं। प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों का अध्ययन करना।

2. शिक्षित महिलाओं द्वारा पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

3.शिक्षित महिलाओं द्वारा धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानने एवं विश्वास के प्रति उनके दृष्टिकोण का अध्ययन करना।

4. विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी का शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों पर पड़े प्रभावों का अध्ययन करना।

शोध उपकरण : प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन मूलतः प्राथमिक आँकड़ों पर आधारित है, जिसमें आवश्यकता एवम् उपयोगिता के आधार पर द्वितीयक आँकड़ों का भी उपयोग किया गया है। प्राथमिक आँकड़े मूलरूप से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्रित किये गये हैं। इंटरनेट, लाइब्रेरी, पत्र एवं पत्रिकाएं, द्वितीयक तथ्यों का एकत्रीकरण, विभिन्न पुस्तकों, समाचार–पत्रों तथा साथ ही आवश्यकतानुसार असहभागी अवलोकन पद्धति का भी प्रयोग किया गया है। अध्ययन की इकाई के रूप में प्रत्येक परिवार की मुखिया महिला उत्तरदाता है तथा एक परिवार से एक ही महिला का चयन किया गया है।

तथ्य विश्लेषण : प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु संकलित तथ्यों के आधार पर निम्नलिखित तथ्यों को उद्घाटित किया गया है –

शिक्षित महिलाओं का धार्मिक विश्वासों के प्रति दृष्टिकोण : मनुष्य में अपने धर्म के प्रति आस्था तथा धार्मिक भावनाएं पाया जाना स्वाभाविक है। सर्वोच्च सत्ता समाज में मनुष्य के ऊपर नियंत्रण रखने वाली एक सर्वोपरि सत्ता है, जिसके अधीन ही संसार की सारी क्रियाएं क्रियान्वित होती हैं। मनुष्य किसी भी कार्य को करने से पहले सर्वोच्च सत्ता की शक्ति का आह्वान अवश्य करता है। चाहे वह कार्य बुरा हो या अच्छा। अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अध्ययन में सम्मिलित सभी उत्तरदाताओं का ईश्वरीय सत्ता में विश्वास का कारण मानसिक शान्ति के साथ–साथ एक ऐसा कारण है, जो कि उसके दैनिक जीवन के क्रियाकलापों को अपने नियंत्रण में रखता है और उसे अपने सर्वोच्च सर्वशक्तिमान होने का एहसास भी दिलाता है।

तालिका 1.3

धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करने के औचित्य के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय

क्रं0 सं0	धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करने के सम्बन्ध मेंउत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	धार्मिक आस्था के कारण धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करते हैं।	30	37.97
2.	परिवार की सुरक्षा के लिए धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करते हैं।	32	40.51
3.	आत्मिक शांति के लिए धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करते हैं।	11	13.92
4.	धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास नहीं करते हैं।	6	7.60
कुल		**79**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षित महिलाओं द्वारा धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करने के सम्बन्ध में 37.97 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं अपनी धार्मिक आस्था के कारण धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करती हैं। 40.51 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं अपने परिवार की सुरक्षा के लिए धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करती हैं। 13.92 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं अपनी आत्मिक शांति के लिए धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करती हैं तथा 7.60 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास नहीं करती हैं।

शिक्षित महिलाओं का पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास के प्रति दृष्टिकोण : पुनर्जन्म का सिद्धान्त हमें यह बताता है कि पूर्व जन्म में हमने जैसे कर्म किए हैं उसके अनुरूप ही हमें अपने जीवन में सुख–दुःख प्राप्त होते हैं। अर्थात् मनुष्यों के कर्मो के आधार पर ही उसके जीवन में उसे सफलता व असफलता मिलती है। मनुष्यों की सत्कर्म में आस्था बनाए रखने तथा दुष्कर्म से उन्हें विरत रखने के उद्देश्य से पुनर्जन्म की धारणा पर विश्वास किया जाता है। मनुष्यों के उत्तम जीवन और उनके अच्छे स्वास्थ्य के लिए समाज द्वारा सामाजिक नियमों के पालन करने की बात कही जाती है।

कर्मफल में विश्वास भी व्यक्ति के वैयक्तिक विकास के संदर्भ में पर्याप्त महत्वपूर्ण होता है। इसे भगवत्गीता के उपदेश के सार में समाहित किया गया है– 'कर्मण्येवाधिकारस्ते, माँ फलेषु कदाचन।' एक संगठित समाज में प्रत्येक सदस्य का एक विशेष कर्तव्य होता है, जिसका वह पालन करता है। प्रत्येक परिस्थिति में व्यक्ति को ऐसे कर्म करने चाहिए जो आंतरिक एवं समाज के लिए उपयुक्त होते हैं। बिना किसी व्यक्तिगत रूचि के व्यक्ति को उपयुक्त मार्ग का अनुसरण करना चाहिए। शिक्षित महिलाओं से पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करने के संबंध में जब प्रश्न किया गया कि क्या आप पुनर्जन्म एवं कर्मफल में आज भी विश्वास करती हैं तो इसके प्रत्युत्तर में उत्तरदाताओं द्वारा अपने जो प्रत्युत्तर दिए हैं, उसे निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 1.4

पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करने के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय का वर्गीकरण

क्रं0 सं0	पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करने के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करते हैं।	48	60.76
2.	पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास नहीं करते हैं।	21	26.58
3.	कोई उत्तर नहीं।	10	12.66
कुल		**79**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षित महिलाओं द्वारा पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करने के सम्बन्ध में 60. 76 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करती हैं। 26.58 प्रतिशत शिक्षित महिलाएं पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास नहीं करती हैं तथा 12.66 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करने के सम्बन्ध में अपना कोई उत्तर नहीं दिया है।

शिक्षित महिलाओं का धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानने तथा विश्वास के सम्बन्ध में दृष्टिकोण : समाज में प्रचलित धार्मिक विश्वासों, रूढ़ियों एवं मूल्यों तथा विश्वासों को परम्परा कहते हैं। मोरिस जिन्सवर्ग ने अपनी पुस्तक 'द साइकोलॉजी ऑफ सोसाइटी' में मनुष्य के विचारों, आदतों और प्रभावों के योग को परम्परा कहा है। परम्पराएं पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती हैं। डी.पी. मुखर्जी ने अपनी पुस्तक 'डाइवर्सिटीज' में परम्परा के विषय में बताया है कि परम्पराएं एवं रूढ़ियाँ व्यक्तियों के समुदायों से सम्बन्धित होती हैं और ये एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती रहती हैं। परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों पर मनुष्य आँख मूदकर विश्वास करते हैं और साथ ही इनका पालन करते हैं। परम्पराओं में तर्क नहीं होता है। आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास के कारण लोगों की तर्क करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। अब लोग हर बात में तार्किकता ढूंढते हैं। लोगों का मानना है कि परम्पराएं मनुष्य के सामाजिक विकास में बाधक होती हैं। शिक्षित महिला उत्तरदाताओं से जब परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों का मानने व विश्वास करने के सम्बन्ध में प्रश्न किया गया कि क्या आप आज भी रूढ़िगत रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं को मानते एवम् उनमें विश्वास करती हैं तो इसके प्रत्युत्तर में उत्तरदाताओं द्वारा दी गयी राय को निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 1.5

धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानने तथा विश्वास करने के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय का वर्गीकरण

क्रं0 सं0	धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानने तथा विश्वास करने के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	अभी भी धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानते एवं उनमें विश्वास करते हैं।	36	45.57
2.	अब धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को न ही मानते हैं और न ही उनमें विश्वास करते हैं।	29	36.71
3.	कुछ धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को ही मानते हैं एवं उनमें विश्वास करते हैं।	14	17.72
कुल		**79**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षित महिलाओं द्वारा धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानने एवं विश्वास करने के सम्बन्ध में 45.57 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने स्वीकार किया कि वे अभी भी धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानती एवं उनमें विश्वास करती हैं। 36.71 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने स्वीकार किया है कि वे अब धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को न तो मानती हैं और न ही उनमें विश्वास करती हैं तथा 17.72 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने स्वीकार किया है कि वे अब कुछ धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को ही मानती हैं और उनमें विश्वास करती हैं।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में दृष्टिकोण : आज का युग विज्ञान का युग है। इस विज्ञान के युग में व्यक्ति के दृष्टिकोणों, विचारधाराओं में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आज कोई भी समाज या व्यक्ति ऐसा नहीं है जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी के प्रभाव से अछूता रहा है। प्राचीनकाल में लोग झाड़–फूंक, जादू–टोना आदि को धार्मिक भावना के साथ जोड़ते थे, परंतु आज सब कुछ परिवर्तित हो गया है। वर्तमान में मानव ने विज्ञान के सहारे अपने पर्यावरण पर काफी नियंत्रण प्राप्त कर लिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि कई समाज या तो धर्म निरपेक्ष हो गये या धार्मिक दृष्टिकोण का रूप परिवर्तित हो गया और धार्मिक विश्वासों की वैधता को स्वीकार नहीं करते।

शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर आज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रभाव देखने को मिल रहा है। अब शिक्षित महिलाओं का धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों को मानने में कमी जरूर आयी है, लेकिन अभी भी शिक्षित महिलाओं का धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों के प्रति झुकाव कायम है। शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों पर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में जब उत्तरदाताओं से प्रश्न किया गया कि क्या विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी से आपके धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों को मानने एवम् उनमें विश्वास करने के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है ता इसके प्रत्युत्तर में उत्तरदाताओं द्वारा दी गयी राय को निम्नलिखित तालिका में प्रस्तुत किया गया है –

तालिका 1.6

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय का वर्गीकरण

क्रं0 सं0	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में उत्तरदाताओं की राय	आवृत्ति	प्रतिशत
1.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से धार्मिक विश्वासों और क्रियाकलापों को मानने एवं विश्वास करने में कमी आयी है।	36	45.57
2.	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से धार्मिक विश्वासों और क्रियाकलापों को मानने एवं विश्वास करने में कमी नहीं आयी है।	43	54.43
कुल		**79**	**100**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में 45.57 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने स्वीकार किया कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के कारण महिलाओं के धार्मिक विश्वासों और क्रियाकलापों को मानने व विश्वास करने में कमी आयी है तथा 54.43 प्रतिशत शिक्षित महिलाओं ने स्वीकार किया है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से धार्मिक विश्वासों व क्रियाकलापों को मानने एवं उन पर विश्वास करने में कोई कमी नहीं आयी है।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी का शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर पड़ने वाले प्रभावों के सम्बन्ध में अधिकतर शिक्षित महिलाओं द्वारा स्वीकार किया गया कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से उनके धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। महिलाओं का मत है कि व्यक्ति चाँद पर पहुँच सकता है, परन्तु हम उसके बाद भी आज सौभाग्य प्रतीक हेतु चाँद व सूर्य की पूजा करते हैं तो कहाँ से हमारे धार्मिक विश्वासों व क्रियाकलापों पर विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रभाव पड़ा है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश शिक्षित महिलाओं

के जीवन में धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों में विश्वास करने के दृष्टिकोण के सम्बन्ध में शिक्षित महिलाएं अपनी धार्मिक आस्था, अपने परिवार की सुरक्षा तथा अपनी आत्मिक शांति के लिए धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों पर विश्वास करती हैं और इन्हें मानती हैं। पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करने के सम्बन्ध में अधिकांश शिक्षित महिलाएं अपने जीवन में पुनर्जन्म एवं कर्मफल में विश्वास करती हैं। शिक्षित महिलाओं द्वारा धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों एवं रूढ़ियों को मानने एवं उन पर विश्वास करने के सम्बन्ध में शिक्षित महिलाएं आज भी इन पर अपना विश्वास जाहिर करती हैं। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों पर पड़े प्रभावों के सम्बन्ध में महिलाओं द्वारा आज भी धार्मिक विश्वासों व क्रियाकलापों को मानने एवं उन पर विश्वास करने में कमी नहीं दिखाई देती है।

प्रस्तुत अध्ययन शिक्षित महिलाओं के धार्मिक विश्वासों एवं क्रियाकलापों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण रानीखेत नगर के परिवारों पर आधारित है। अध्ययन यह संकेत करता है कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के इस युग में शिक्षित व जागरूक महिलाएं धार्मिक विश्वासों व क्रियाकलापों के प्रति आज भी आस्थावान हैं। वे अपने धार्मिक विश्वासों व क्रियाकलापों को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. दुर्खीम, इमाइल (1912), 'दि ऐलीमेन्ट्री फार्म्स ऑफ रिलिजियस लाइफ', जॉर्ज एलन एण्ड अनविड पब्लिकेशन, लंदन।
2. जॉनसन, एच.एम. (1960), 'सोशियोलॉजी ऑफ रिलिजन', ड्राइड्रेन प्रेस, न्यूयॉर्क।
3. नवानी लोकेश एवं कल्याण सिंह रावत (2016), 'बिनसर उत्तराखण्ड इयर बुक'।
4. www.censusindia.co.in'Ranikhet Populations'
5. www.censusindia.co.in'Ranikhet Wards'
6. महर्षि वेदव्यास कृत महाभारत।
7. अमर उजाला (9 दिसम्बर 1995) 'धर्म का आशय क्या है।'
8. मजूमदार एण्ड मदान (1961), 'एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशियल ऐन्थ्रोपोलॉजी', एशिया पब्लिशिंग हाऊस बॉम्बे।
9. पी.बी. काणे (1966), 'धर्मशास्त्र का इतिहास', चतुर्थ खण्ड।
10. हरिदत्त वेदालंकार, 'हिन्दू परिवार मीमांसा।'